दुनिया के लिये भारत द्वारा, भारत में ही डिज़ाइनिंग
एनआईडी अहमदाबाद ने किया ऊंचा दर्ज़ा हासिल

डिज़ाइन के बारे में ज़रा कल्पना कीजिए, और आपकी आंखों के सामने सुरूचिपूर्ण ढंग से डिज़ाइन की गई वस्तुएं होंगी! ऐसी कोई सोच जो कि इस अपरिमित पद्धति के पीछे हो सकती है? और ऐसा कोई अधिक बार नहीं होता है, ये तो अवश्य ही राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान (एनआईडी) से कोई ही छात्र होगा। दुनिया भर के सर्वोच्च संस्थानों में से एक, राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान के प्रति हमेशा सम्मान और विस्मय केवल संस्थान को लेकर नहीं, बल्कि अदभुत डिज़ाइनों को लेकर उत्पन्न हुआ है, जो कि एनआईडी के उत्तेजना पैदा कर देने वाले पोर्टल्स में मौजूद डिज़ाइनों से संपूर्ण जगत को अपनी तरफ आकृष्ट करते हैं।

1961 में इसकी स्थापना से लेकर एक लंबा मार्ग तय करने के बावजूद, अभी भी कुछ टीस होना गलत नहीं है। छात्र एनआईडी के लिये आते रहे हैं, परंतु केवल एक डिप्लोमा के साथ उभरते रहे।

2014 में एक उस वक्त एक ऐतिहासिक क्षण आया, जब एनआईडी को अपनी तरह के पहले डिज़ाइन स्कूल के तौर पर ''राष्ट्रीय महत्व का संस्थान'' घोषित कर दिया गया। दरअसल इस सरकार की ओर से संसद में पेश किया गया सबसे पहला विधेयक एनआईडी एक्ट, 2014 था। इससे भारतीय उद्योग के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिये डिज़ाइन को एक औज़ार के तौर पर आगे बढ़ाने की दिशा में मौजूदा सरकार की प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। एनआईडी के संकाय और छात्रों के प्रति यह एक गौरव की बात है कि इस विधेयक को संसद के दोनों सदनों ने रिकार्ड समय के भीतर सर्वसम्मति से पारित कर दिया। राज्यसभा ने विधेयक को 7 जुलाई 2014 को मंजूरी प्रदान की और इसके अगले दिन लोकसभा ने इसे पारित कर दिया। विधेयक को 17 जुलाई 2014 को महामहिम राष्ट्रपति की स्वीकृति भी प्राप्त हो गई।

अधिनियम ने देश में डिज़ाइन शिक्षा में लंबी छलांग के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया। बैचलर/मास्टर्स डिग्री (बी.डिज़ाइन/एम.डिजाइन) प्रदान किये जाने से इस दिशा में आगे डिज़ाइन में डॉक्टरल अध्ययनों/आकदमिक शोध के लिये भी मार्ग प्रशस्त होगा। डिज़ाइन शिक्षा के लिये अंतर्राष्ट्रीय बेंचमार्किंग से डिज़ाइन आंदोलन को प्रोत्साहन और इसके छात्रों को गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी।

डिज़ाइन क्लीनिक योजना के जरिये डिज़ाइन से जुड़ी कार्यनीतियों से देशभर में सूक्ष्म, लघु, कुटीर और मझौले उद्योग समूहों को लाभ पहुंचने से ''मेक इन इंडिया'' में भी डिज़ाइन एक उत्प्रेरक का काम करेगा। इस वर्ष एनआईडी, अहमदाबाद ने भारतीय रेलवे से 10 करोड़ रू ($1.6 मिलियन अमरीकी डॉलर के कोष के साथ एक रेलवे डिज़ाइन सेंटर की स्थापना के साथ एक कदम और आगे रखा है। अगले 10 वर्षों में इस केंद्र द्वारा भारतीय रेलवे को विशेष तौर पर समर्पित सतत डिज़ाइन अनुसंधान और विकास के जरिये यात्री और माल ढुलाई की सुविधाओं में क्रांतिकारी परिवतर्न लाये जाने की आशा की जाती है। जाहिर तौर पर, भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा-भारतीय रेल- को खुद-ब-खुद एक नया जीवन मिलेगा क्योंकि एनआईडी ने यात्री अनुकूल कोचों और स्टेशनों की डिज़ाइनिंग के लिये एक महत्वपूर्ण काम को हाथ में लिया है। यह यात्रा यहीं समाप्त नहीं हो जाती। धरती से आसमान तक सूची इतनी लंबी है कि इसका कोई अंत नहीं हैय एनआईडी ने अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के साथ भी गठजोड़ किया है।

डिज़ाइन पूरे भारत में प्रोत्साहन के लिये तैयार खड़ा है। हालांकि बहुत पहले 2007 में राष्ट््रीय डिज़ाइन नीति के भाग के तौर पर चार नये राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थानों की स्थापना का लक्ष्य रखा गया था परंतु इस काम में हाल में ही तेज़ी आई है। शीघ्र ही विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश), जोरहाट (असम), कुरूक्षेत्र (हरियाणा) और भोपाल (मध्य प्रदेश) में ये नये डिज़ाइन स्कूल स्थापित हो जायेंगे, जो कुल मिलाकर भारत में डिज़ाइनिंग को नये शिखर पर ले जायेंगे।

अतः अगली बार यदि आपके मन में ड़िजाइन के बारे में कोई विचार आता है तो, तो केवल राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान के बारे सोचें।

राजिन्द्र चैधरी
डीपीओ, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(मंत्रालय से प्राप्त जानकारी पर आधारित)